दीवार पत्रिका : कक्षा-कक्ष से बाहर सीखने-सिखाने की नायाब खिड़की

अनिल सिंह

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005 के अन्तर्गत 'शिक्षा के लक्ष्य' विषय का राष्ट्रीय फोकस समूह अपने आधारपत्र में यह बात स्पष्ट रूप से कहता है कि स्कूली व्यवस्था में एक विशेष तरह की कठोरता है जो बदलाव के मार्ग में बाधा की तरह खड़ी हो जाती है। फोकस समूह इस बात को भी स्वीकार करता है कि 'सीखना' एक प्रकार से अलग-थलग गतिविधि हो गई है जो बच्चों को अपने ज्ञान को जैविक व जीवन्त तरीक़े से जीवन से जोड़ने को प्रोत्साहित नहीं करती।

हमारा अनुभव बताता है कि स्कूल अपने आप में एक सत्ता-केन्द्र रहा आया है और शिक्षक उसके एक प्रतिनिधि के रूप में पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से इस सत्ता को साधने की कोशिश करता है। कक्षा-कक्ष में यह भली-भाँति चलता है और सीखने-सिखाने की इस केन्द्रीकृत प्रक्रिया में सीखने वाले का ज्ञानशास्त्रीय उद्यम विरले ही इस्तेमाल होता है। यही कारण है कि सवालों के तयशुदा जवाब, किताबी भाषा और किताबी उदाहरण, अप्रासंगिक तर्क और आधार, नीरस विश्लेषण और जीवन से कटे हुए अनुभव देखने को मिलते हैं। इसलिए सीखने-सिखाने के तरीक़ों और नज़रिए की समीक्षा होती रहनी चाहिए।

कक्षा-कक्ष के बाहर, जीवन से जुड़ी ऐसी तमाम विधाएँ व विधियाँ हैं जो सीखने-सिखाने को न सिर्फ़ जीवन्त बनाती हैं बल्कि सीखने वाले के ज्ञानशास्त्रीय उद्यम के कई घटकों को उस प्रक्रिया में शामिल भी करती हैं। इस आलेख में एक ऐसी ही विधि के बारे में चर्चा की गई है जिसे हम 'दीवार-पत्रिका' के नाम से जानते हैं।

दीवार-पत्रिका को स्कूल में आमतौर पर ग़ैर-अकादमिक गतिविधि के रूप में देखा और माना जाता है क्योंकि इसमें पाठ्यक्रम से इतर सामग्री होती है, यह कक्षा-कक्ष के बाहर सम्पन्न होती है, शिक्षक के नियंत्रण और देख-रेख के बिना भी सम्भव है, इसका कोई तयशुदा स्वरूप नहीं और इसमें सीखने वालों की स्वायत्तता अपेक्षाकृत अधिक होती है। कई बार तो यह आर्ट एंड क्राफ्ट की क्लास में तब्दील होते देखी गई है। मुश्किल, आर्ट एंड क्राफ्ट से नहीं बल्कि इसके उद्देश्य से भटक जाने की है। कमाल की बात तो यह है कि इसका यही तथाकथित ग़ैर-अकादमिक स्वरूप ही इसकी ज़बर्दस्त ताक़त है। इसकी इस ताक़त को यहाँ हम सिलसिलेवार ढंग से समझने की कोशिश करेंगे।

शिक्षा के उद्देश्य पर एनसीएफ़ 2005 की टिप्पणी है कि सीखने वाला यदि खोजने की तरफ प्रवृत्त न हो तो फिर सीखना-सिखाना व्यर्थ हुआ। इस रोशनी में दीवार पत्रिका को देखें तो वह बच्चों को, चुने गए टॉपिक के इर्द-गिर्द सामग्री खोजने को प्रेरित करती है। पाठ्यपुस्तक से बाहर चीज़ों पर नज़र डालना, जीवन के अनुभवों को तराशना, कल्पना के घोड़े दौड़ाना वगैरह। और वह भी ख़ुद की पहल पर, ख़ुद की ग़रज़ से। पाठ्यपुस्तक से बाहर खोजने और परखने का जो उन्मुक्त सिलसिला शुरू होता है वह सही मायनों में रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। आनन्द निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल में 'आज़ादी' विषय पर दीवार-पत्रिका तैयार करते समय बच्चे सिर्फ़ किताबी आज़ादी के बारे में नहीं सोच रहे थे जो कि अँग्रेज़ी हुकूमत से मुक्त होने के सन्दर्भ तक सीमित थी बल्कि वे किताब से बाहर विविध मायनों में आज़ादी पर विचार कर रहे थे। सबके लिए आज़ादी के अलग अर्थ रहे। पशु-पक्षियों की क़ैद और आज़ादी भी उनके सोचने के विषय रहे। आज़ादी पर किसी किताबी कविता को चुनने की बजाए उन्होने ख़ुद नई कविता लिखना पसन्द किया। स्कूल में शिक्षकों से, साथियों से और परिजनों से बात कर उनके लिए आज़ादी के मायने खँगाले और तब जाकर आज़ादी विषय पर उनकी दीवार-पत्रिका तैयार हुई।

दीवार-पत्रिका जहाँ एक ओर रचनात्मकता के दरवाजे खोलती है वहीं दूसरी ओर विविध जीवन-कौशल सीखने के मौक़े भी बना रही होती है। शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों के हवाले से

बात करें या विषयगत उद्देश्यों की, दोनों ही लिहाज से इन जीवन-कौशलों को महत्त्वपूर्ण माना गया है। दीवार-पत्रिका के बहाने बच्चे समूह में काम करने, समूह में अपनी जगह बनाने, तार्किक बहस करने, उपयुक्त सामग्री का चयन करने, एक-दूसरे के मतों-अभिमतों का सम्मान करने, असहमतियों को स्वीकारने और समन्वय बनाने जैसे जीवन-कौशल सीख रहे होते हैं। और यह सीखना बिल्कुल जैविक तरीक़े से होता है, उन्हें कोई सिखा नहीं रहा होता। वह छोटा-सा समूह, एक पूरा समाज बन जाता है और सामाजिक तौर-तरीक़े उसकी ज़रूरत बन जाते हैं। लक्ष्य एक ही होता है, बेहतर दीवार-पत्रिका निकालना।

स्कूल में जहाँ एक तरफ पढ़ना-लिखना सिखाने को लेकर तमाम चिन्ताएँ और प्रयास चल रहे होते हैं वहाँ यह बात छूट ही जाती है कि इस लिखने-पढ़ने की ऊर्जा, इसकी जीवन्तता और अर्थवेत्ता कैसे बनाई और कायम रखी जा सके। यदि लिखना-पढ़ना किसी सामान्यीकृत उपलब्धि की बजाए, विशिष्ट उपलब्धि की प्रेरणा बन सके, तो वह न सिर्फ़ मज़ेदार बल्कि अर्थपूर्ण भी हो सकता है। ऐसे में दीवार-पत्रिका को आकर्षक, पढ़ने लायक और लोगों के ध्यान का केन्द्र बनाने जैसा लक्ष्य इसकी ऊर्जा का स्रोत बन जाता है। कक्षा के भीतर के रुटीन और किताबी सवाल-जवाब के लेखन में इस ऊर्जा का नितान्त अभाव होता है। उसे आकर्षक, पढ़ने लायक और लोगों के ध्यान का केन्द्र बनाने जैसी बात वहाँ कहाँ? शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों में जहाँ कौशलों की बात होती है वहाँ समुदाय की इच्छाओं, आकांक्षाओं से जुड़े कौशलों की भी बात होती है। इसे मोटेतौर पर सौन्दर्यशास्त्रीय कौशलों के रूप में देखा जा सकता है। दीवार-पत्रिका में लेखन, इसका निर्माण, इसकी सजावट और प्रस्तुति इन सौन्दर्यशास्त्रीय कौशलों का ख़ूब पोषण करती है।

दीवार-पत्रिका के लिए लिखा गया यात्रा संस्मरण किसी प्रश्न के उत्तर में नही लिखा गया, और न ही कविता, हिन्दी व्याकरण के किसी रस या भाव के उदाहरण स्वरूप लिखी गई है। बल्कि वह स्वतःस्फूर्त सृजन है, उन्मुक्त और मौलिक है। यह लेखन या चित्रकारी सहज ही आई है, किसी के दबाव में नहीं। ऐसी रचना ही शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा कर पाएगी। स्पर्धा के इस युग में बच्चों के आत्मविश्वास और व्यावहारिक समझ की काफ़ी बातें होती हैं और शिक्षा से यह उम्मीद भी लगाई जाती है कि वह समाज की इन अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा करे। एनसीएफ़ 2005 भी अलग-अलग ज़रिए से इनकी बातें करता है और एक बेहतर नागरिक के निर्माण में शिक्षा के इस योगदान को रेखांकित करता है। सीखने-सिखाने के विकेन्द्रीकृत तौर-

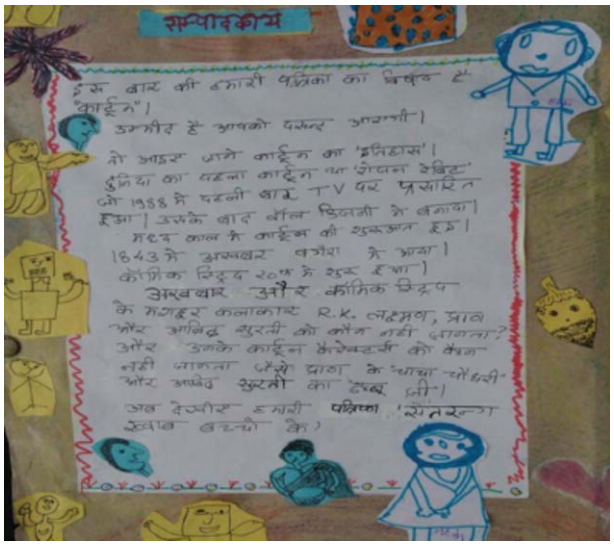

तरीक़े, बच्चों की समझ और उनकी मेधा पर भरोसा और कक्षा-कक्ष में गुरुता का स्थगन ही इसके साधन हो सकते हैं। क्रियाकलापों और प्रोजेक्ट की योजना बनाने से बच्चों में जिस आत्मविश्वास और व्यावहारिक समझ का निर्माण होता है वह कक्षा-कक्ष के भीतर शिक्षक के एकतरफा सम्भाषण से सम्भव ही नहीं। इस क्रम में दीवार-पत्रिका एक मुकम्मल प्रोजेक्ट की तरह पेश आती है। जिसमें विविध हस्त-कौशल गतिविधियों के साथ ही योजना बनाने, ज़िम्मेदारी बाँटने, दक्षताओं की पहचान करने और योजना का क्रियान्वयन करने जैसी समझ शामिल है।

दीवार-पत्रिका के इन क्रियाकलापों/ सामग्री के माध्यम से पाठ्यक्रम में स्थानीय सन्दर्भ और विविध सांस्कृतिक सन्दर्भों को समाहित करने का रास्ता भी खुलता है। बच्चे अपने जीवन-अनुभवों, रीति-रिवाजों और मान्यताओं के लिए उसमें जगह बनाते हैं। एक-दूसरे की पृष्ठभूमि से परिचित होते हैं। पाठ्यपुस्तक में आए विषय, दीवार-पत्रिका के ज़रिए विस्तार पाते हैं। विषयवस्तु में नए आयाम जुड़ते जाते हैं। एनसीईआरटी की कक्षा 3 की *रिमझिम* में कविता '*मन करता है*' ऐसा ही एक उदाहरण बना। बच्चों ने इसी शीर्षक से अपनी

दीवार-पत्रिका तैयार की। बच्चों द्वारा तैयार दीवार-पत्रिका की विषयवस्तु, शिक्षक के लिए आगे की दृष्टि और पाठ-सामग्री बन गई। कई बार कक्षा-कक्ष के भीतर नहीं हो सकने वाली बात कक्षा-कक्ष के बाहर दीवार-पत्रिका के बहाने हो जाती है और पाठ्य-सामग्री को समृद्ध बनाती है।

दीवार-पत्रिका पर सवार होकर पाठ्यपुस्तक एक गतिशील दस्तावेज़ बन जाती है। उसके एक-एक पाठ से बच्चों के जीवन, उनके अनुभवों, आकांक्षाओं और दृष्टिकोण के कई-कई धागे निकलते हैं। इन धागों के ताने-बाने में बुनी गई दीवार-पत्रिका कक्षा-कक्ष के बाहर एक पूरा संसार रच सकती है, जो शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों के साथ ही विषयगत लक्ष्यों को भी पूरा कर सकती है। ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षक और स्कूल प्रबन्धन इसके महत्त्व को समझे, इसे सीखने- सिखाने की एक मुकम्मल विधि के रूप में स्वीकारे और बच्चों को इसकी स्वायत्तता दे। शिक्षक के हस्तक्षेप से बाहर ही दीवार-पत्रिका का सौन्दर्य है।

अनिल सिंह विगत 15 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं, ख़ासकर स्कूली शिक्षा में। हिन्दी भाषा-शिक्षण के साथ ही थिएटर को विद्यार्थियों के लिए रोज़मर्रा का हिस्सा बनाने के काम से जुड़े हुए हैं। स्टोरी टेलिंग में ख़ास दिलचस्पी है। अनिल के कक्षा-अनुभवों एवं शिक्षा के अन्य मसलों पर लिखे आलेख नियमित रूप से प्रकाशित होते रहते हैं। वर्तमान में अनिल, आनन्द निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल, भोपाल से जुड़कर शिक्षा के वैकल्पिक मॉडल पर काम कर रहे हैं। उनसे *bihuanandanil@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।